IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कार्तिक मास के पंचपर्वों में कलात्मक स्वरूप

प्रो0 अजय जैतली (विभागाध्यक्ष)
दृश्य कला विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज
सप्तमी पाल (शोध छात्रा)
दृश्य कला विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सारांश– *कार्तिक मास हिन्दू धर्म में अत्यन्त ही पवित्र व महत्वपूर्ण महीना माना जाता है। हिन्दु मान्यता में स्नान, दान एवं पूजा–पाठ का विशेष महत्व होता है जिसे करने से कई गुना फल प्राप्ति होती है। इस मास में मुख्य रूप से भगवान विष्णु, श्री गणेश, माँ लक्ष्मी और तुलसी जी का विशेष पूजन–अर्चन किये जाने की परम्परा रही है। इसी मास में ही कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी (प्रबोधिनी एकादशी) को भगवान विष्णु चार महीने विश्राम के उपरान्त जागते हैं जिसके फलस्वरूप सभी मांगलिक कार्य पुनः प्रारम्भ हो जाते है। इस मास में कई महत्वपूर्ण पर्व मनाएं जाने की परम्परा है जिसमें पंच पर्व (धनतेरस, नरकचर्तुदशी, दीपावली, गोवर्धन पूजा, भाईदूज) विशेष है, इन पंचपर्वों के वैविध्य महत्व, कथा व पूजा पद्धति है। इन पर्वों पर कलात्मक लोक तत्वों के स्वरूप अनेक माध्यमों में प्राप्त होते हैं जैसे– पारम्परिक मिट्टी के खिलौने, घरौंदे, दिये, रंगोली, चौक, झांकी आदि। इन कलात्मक लोक स्वरूपों से ही हम परम्पराएं, रीति–रिवाज आदि को आत्मसात कर सकते हैं।*

मुख्य शब्द– कार्तिक मास, पंचपर्व, कलात्मक, परम्परा

भूमिका– कार्तिक मास हिन्दू धर्म में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण महीना माना जाता है। इस मास में स्नान, दान एवं पूजा–पाठ का अत्यधिक महत्व रहा है। इस मास ऋतु का परिवर्तन, ग्रीष्म से सर्द की ओर होना प्रारम्भ हो जाता है जो लोगों के लिए बहुत ही अनुकूल और सुहावना होता है, यह मास शरद पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर कार्तिक मास की पूर्णिमा तक रहता है। नदियों के किनारे भिन्न–भिन्न स्थानों पर पूरे मास भर आस्था व विश्वास का मेला लगने की परम्परा है जहाँ का अपना एक अलग नजारा होता हैं। इस पवित्र मास में कई महत्वपूर्ण पर्व मनाएं जाने की परम्परा है जैसे– करवा चौथ, अहोई अष्टमी, धनतेरस, नरक चर्तुदशी (छोटी दीपावली), दीपावली, गोवर्धन पूजा, भाईदूज, छठ पूजा, आंवला नवमी, देवोत्थान एकादशी, कार्तिक पूर्णिमा आदि[1]। इस महीने प्रमुख रूप से माँ लक्ष्मी, भगवान विष्णु तथा तुलसी के पौधे की पूजा अर्चना कर धन–धान्य, सुख–समृद्धि एवं आरोग्यता की कामना के लिए विशेष पूजा अर्चना की जाती है। इन अवसरों पर भगवान के मूर्त व अमूर्त चित्रों के द्वारा या प्रतीकों को गेरू, चूना, आटा, रोली, कुमकुम, हल्दी आदि से बनाकर पूजा की जाती है। कार्तिक मास की अपनी अलग ही उमंग है वह चाहे बच्चे हो या बड़े बूढ़े ही क्यों न हो बच्चे पटाखे, छुरछुरया, चकरी, अनार आदि की आतिशबाजी करते हैं। छोटे बच्चे मिट्टी के घर (घरौंदा) बनाकर सजाते एवं बच्चे गुड़ियां–गुड्डे तथा खिलौने से इस घरौंदे में खेलते हैं, इस घर को कच्ची मिट्टी से अलंकृत किया जाता है जो अत्यधिक मनोरंजित दिखाई देता है, इसे एक मंजिला व दो मंजिला भी बनाया जाता है बनाने के उपरान्त इसे चूना,

पीली मिट्टी और गेरू आदि से रंगा जाता है। वही घर के बड़े एवं महिलाएं अनुष्ठान आदि कर घर में सकारत्मकता का भाव जगा कर प्रसन्न होते है।

पंचपर्वों का वर्णन निम्न है–

धनतेरस– यह पर्व कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को मनाया जाता है। इस दिन से ही कार्तिक मास के पंच पर्व (धनतेरस, नरकचर्तुदशी, दीपावली, गोवर्धन पूजा, भाईदूज) मनाने की शुरूआत हो जाती है। इस दिन माना जाता है कि समुद्र मंथन से धनवन्तरी भगवान अमृत का कलश लेकर उत्पन्न हुए थे इसलिए इसे धनतेरस या धनत्रयोदशी भी कहते हैं।[2] महिलाएं धर को साफ कर उसे लीपने का रिवाज करती हैं, तथा घरों को सजाने के लिए अल्पना, चौक पूरन एवं दीपों को प्रज्वलित कर घर को प्रकाश मय बना देती हैं। लोक मान्यता के अनुसार धनवनतरी जी कलश (पात्र) लेकर उत्पन्न हुए थे इसलिए बर्तन खरीदने की पराम्परा चली आ रही है इसके साथ सोने–चाँदी के सिक्के, आभूषण, वाहन, गणेश लक्ष्मी की मूर्ति, कपड़े आदि भी खरीदे जाते है। धनतेरस का पर्व यश, वैभव, कीर्ति, व सुख–समृद्धि का पर्व माना गया है। बाजारों में मिट्टी के कलात्मक दीये भी मिलते हैं, मिट्टी की महिला आकृति होती है उसके दोनों हाथों तथा सिर पर दिये लगे होते है इसी तरह खिलौने, मंदिर, घर आदि में भी दिये लगे मिलते है जिसे लोग बड़े उत्साह से खरीदते है। वही इस अवसर पर बिकने वाले कुम्हारों द्वारा बनाए गए पारम्परिक खिलौने(चूल्हा, चकरी, जाता, थाल, कल्छुल आदि) भी बच्चों के उत्साह में बढ़ोत्तरी कर देते हैं वे इसे अवश्य खरीदते है सुन्दर खिलौने से वह घर–घर, गुड़ियां–गुड्डे की शादी, खाना पकाने आदि खेल खेलते है।[3]

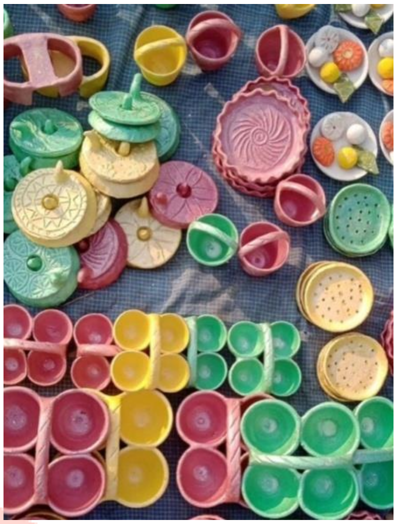

पारम्परिक खिलौने

नरक चतुर्दशी– यह पर्व कार्तिक मास की चतुर्दशी को मनाया जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार नरकासुर नामक एक राक्षस था जिसने हर जगह आतंक व अत्याचार फैला रखा था। निर्दयी नरकासुर ने सोलह हजार एक सौ रानियों को बन्दी बना रखा था तब भगवान कृष्ण ने इस राक्षस का वध करके उन्हे मुक्त कराया, तब सभी लोगों ने आनन्दित होकर दीप जलाकर इस दिन को उत्सव के रूप में मनाया, इसे छोटी दीपावली के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन दीपक जलाने का विशेष महत्व है शाम के समय चौमुखा (चार बाती वाला) दीप जलाया जाता जिसे यम का दिया भी कहते है लोक मान्यता है कि यम का दिया जालाने से अकाल मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है। नरक चतुर्दशी के दिन को हनुमान जयंती के रूप में भी मनाया जाता है जन्म के शुभ अवसर पर चिरंजीवी हनुमान जी का विशेष श्रृंगार व मंदिर को अत्यन्त भव्य अंलकरण के साथ सजाया जाता है, और अनेक स्थानों से शोभायात्रा भी निकाली जाती है। इसके साथ ही अनेक घरों व धार्मिक स्थानों पर सुन्दरकाण्ड, हनुमानाष्टक, हनुमान चलीसा, बजरंग बाण, भजन–कीर्तन आदि के पाठ कराए जाते हैं। [4]

माटी शिल्प के दीपक

दीपावली यह का पर्व हिन्दुओं के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण व शुभता प्रदान करने वाला पर्व है यह पर्व कार्तिक मास की अमावस्या को बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। प्राचीन हिन्दू ग्रन्थ रामायण में बताया गया है कि भगवान राम, सीता और लक्ष्मण को पिता द्वारा दिए गए वनवास को पूर्ण करके अयोध्या आए थें पूरी अयोध्या में लोगों ने उनके स्वागत व खुशियों हेतु द्वारों का सजाया, पताका लगाया और ,चौक पूरी गई तथा दीपों की पंक्तियाँ लगा दी गई[5] तब से ही कार्तिक अमावस्या पर दीपक जलाने की परम्परा चली आ रही है । भगवान राम ने पापी रावण का अन्त कर लागों को उसके पापों से मुक्त कराया इसलिए यह पर्व अन्धकार पर प्रकाश की जीत का पर्व है।

यह धार्मिक पर्व स्वच्छता एवं प्रकाश का पर्व माना गया है जिसमें लोग सप्ताह भर पहले से ही साफ सफाई रंगाई–पोताई सजावट आदि कर के घरों को अत्यधिक सुन्दर बनाने का प्रयास करते हैं जो प्रकिया दिवाली तक चलती रहती है। इस दिन श्री गणेश और माँ लक्ष्मी की पूजा की जाती है।[6] इसके साथ ही यन्त्र व तन्त्र सिद्धी के लिए भी पूजा की जाती है। मान्यता है कि लक्ष्मी जी रात्री में विचरण करती है। इसलिए सभी लोग समृद्धि की देवी का आगमन के लिए सुन्दर रंगोली (आटे, हल्दी, रोली, कुमकुम, और फूलों का प्रयोग कर) बनाई जाती है इस रंगोली में लक्ष्मी जी के चरण, श्री, स्वास्तिक, ऊँ आदि शुभ प्रतीक का चित्रण किया जाता है। यह आंगन, पूजा घरों, मुख्य द्वारों इसके साथ ही अलंकृत चौक (पीसे हुए चावल से) पुरी जाती है। कार्तिक मास में तुलसी पूजन का विशेष महत्व है इसलिए तुलसी जी के पौधे के पास भी विशेष चौक पूरी जाती है श्रृंगार, पूजा–पाठ, धूप–दीप, मिष्ठान आदि का भोग लगाया जाता है। सुन्दर रंगीन लाइट, अलंकृत झूमर, छोटे बल्बों की झालर आदि से घरों को सुन्दर, आकर्षित व भव्य बनाते है जिससे लक्ष्मी की कृपा वर्ष भर बनी रहे।

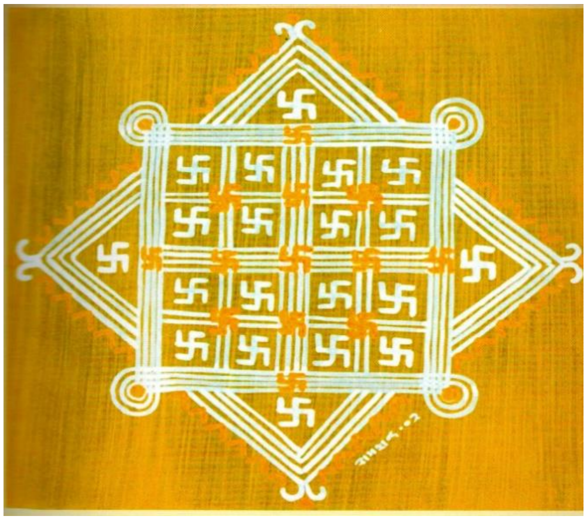
चौक

लक्ष्मी पूजन में फूल (विशेष कर कमल), फल, श्री फल, मिठाई, धूप–दीप, लाई–लावा, गट्टा आदि के द्वारा विशिष्ट पूजा की जाती है इस अवसर पर एक विशेष तरह की मिठाई मिलती है जो शक्कर के शीरे से विभिन्न आकारों (हाथी, घोड़ा, बत्तख, चिड़ियाँ, घर आदि) में निर्मित होती है जिसे बच्चे बड़े उत्साह से पसंद करते है और वह उसे खाते अथवा खेलतें है। इस अवसर पर उपहार देने की भी परम्परा है घर का मुखिया भेंट स्वरूप उपहार (पैसे, मिठाई, मेवे) आदि देता है जिसमें वात्सल्य व आशीर्वाद का भाव निहित होता है।

दीपावली के इस अवसर पर पूर्वी उत्तर प्रदेश व अन्य हिस्सों में सूरन की सब्जी बनाने का रिवाज है जो बहुत ही शुभ मानते है, और इसे बनाकर पूरे परिवार में बांटा जाता है। सूरन आलू की तरह जमीन के अन्तरिक हिस्सों में होता है इसे निकालने के बाद भी इसकी जड़े ही पुनः अगले वर्ष सूरन बन जाता है इसे लोग उन्नति व वंश वृद्धि का प्रतीक मानते है, दीपावली भी उन्नति, समृद्धि और खुशहाली का प्रतीक है इसलिए सूरन (ओल, खन्त, जिमीकंद) की सब्जी बनाने की परम्परा आज भी चली आ रही है।[7] इसी तरह की एक प्राचीन परम्परा और भी जुड़ी है वह काजल पारने की है दीपावली पूजन के साथ ही एक बड़े प्याले में सारसों के तेल से दीपक जलाकर दूसरे प्याले से ढक कर लक्ष्मी जी के समक्ष काजल पारने या उतारने का रिवाज होता है इस पारे गए काजल की मान्यता है कि इससे आँखों की रोशनी बढ़ती है तथा आँखों सम्बन्धित कोई रोग नहीं होता है।[8]

गोवर्धन पूजा यह गोधना लोक चित्रकला की प्रचीन पौराणिक विधा है लोक संस्कृति में गोधन कूटना एक महत्वपूर्ण लोक पर्व है। यह लोकचित्रण कार्तिक मास में दीपावली के दूसरे दिन कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को मनाया जाने वाला पर्व 'गोवर्धन पूजा' के अवसर पर किया जाता हैं इस त्योहार पर स्त्रियाँ व्रत रखती है। वही पौराणिक मान्यताओं के अनुसार जीवन को अलंकरण से पूर्ण करना है गोबर से भगवान इन्द्र की प्रतिमा बनाई जाती है,[9] गोधन चित्रण घर के बाहर तथा आंगन में भूमि को साफ करके, उसे गाय के गोबर से लीप कर वहाँ गोवर्धन की प्रतिमा बनायी जाती हैं। इस भूमि अलंरण में भाई बहन पहरेदार, चाँद, सूरज, बिच्छू, सांप, तुलसी आदि पात्रों को गोबर से ही बनाया जाता है इसमें मुख्य आकृति गोधना–गोधनी की होती है जो सबसे बड़ी बनाई जाती है। इन आकृतियों के मुख में दाँत लगाकर बनाये जाते हैं तथा कौड़ियों से आंखें और उनके बाल औरतों के कंघी किये गिरे हुए बाल से बनाया जाता है।[10]

गोवर्धन पूजा

अन्नकूट के पर्व के नाम से भी जाना जाता है इस पर्व का भारतीय लोक जीवन में विशेष महत्व है इस दिन लोग घर के आंगन, मंदिरों व धार्मिक स्थालों पर गोवर्धन रूपी कृष्ण को अन्नकूट का भोग लगाया जाता है, अन्नकूट के

इस भोग में महाप्रसाद (चावल), पीताम्बरी (कढ़ी), मूंग, बाजरा, खीर, पुआ, गद्दा की सब्जी (सभी सब्जियों का मिश्रण) का भोग लगता है अन्नकूट को सदारथ भी कहते है इसके साथ ही छप्पन प्रकार के भोग लगाए जाने की परम्परा है। कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिप्रदा के दिन गोर्वधनधारी की विशेष झांकी सजाने की परम्परा है इस पर्व में मानव एवं प्रकृति का सीधा सम्बन्ध दर्शाया गया है। गोवर्धन पर्व की अपनी मान्यताएँ एवं लोककथाएं भी प्रचलित है इस पर्व का सम्बन्ध गोवर्धन पर्वत, गायों की वृद्धि एवं गऊओं के पालनकर्ता भगवान कृष्ण से है। गोवर्धन पर्वत की हरी–भरी घास खाकर गायों का वंश बढ़ता था अतः भगवान कृष्ण ने गायों के पोषक को आराध्य व पूज्यनीय घोषित कर दिया। कृष्ण निर्देशानुसार लोग इन्द्र की पूजा के स्थान पर पर्वत गोवर्धन की पूजा करने लगे जिसके फलस्वरूप भगवान इन्द्र रूष्ट होकर अत्यधिक वर्षा करने लगे तब स्थिति प्रलयकारी देखकर कृष्ण भगवान ने अपनी अनामिका उंगली से गोवर्धन पर्वत को सात दिन तक उठाकर इन्द्र के विनाशकारी प्रभाव को विफल कर ब्रजवासियों की रक्षा की, तभी से कृष्ण को गोवर्धन धारी कहा जाने लगा और प्रत्येक वर्ष इसी दिन गोवर्धन पर्वत की पूजा करने की परम्परा प्रारम्भ कर दी गई।

भाई दूज पर्व दीपावली के दूसरे दिन कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितिया को मनाया जाता है। यह पर्व भाई बहन के अटूट प्रेम को प्रकट करता है इस दिन यमुना स्नान या अन्य नदी का स्नान कर पूजा इत्यादि कर भाई के माथे पर तिलक एवं आरती करती है तदुपरान्त कुछ मिठा खिलाती है, भाई भी उपहार स्वरूप कुछ देता है। कुछ जगह इस दिन अनुष्ठान करने की भी परम्परा है। घर की सबसे बड़ी महिला स्वयं या किसी अन्य महिला द्वारा भूमि पर पीसे हुए चावल से एक वर्गाकार आकृति में भाई दूज सम्बन्धि चित्र बना कर दूज की पूजा की जाती है। इस चित्र में सूरज, चाँद, भाई–बहन, अष्टदल कमल, यमुना नदी की लहरें आदि बनाई जाती है पूजा में बहनें भाई की मंगल कामना कर आशीर्वाद प्राप्त करती है दूज चौक के पास ही स्त्रियां भाई दूज सम्बन्धित प्रचलित कहानियाँ भी कहती हैं।[11] जो इस प्रकार है–

भाई दूज

भगवान सूर्य और पत्नि छाया के पुत्र यमराज और यमुना जी थी दोनों में ही बहुत प्रेम था। यमुना अपने भाई को अपने घर मिलने व भोजन के लिए बुलाती थी पर यम अपने कार्य में हमेशा इतने व्यस्त रहते थे कि यमुना की बात को टाल दिया करते थे, एक दिन अकस्मिक ही यम बहन के घर पहुँच गए, यमुना अपने भ्राता को देखकर अत्यधिक प्रसन्न हुई यम को आदर व प्रेम पूर्वक घर के अन्दर ले गई और आदर सत्कार कर भोजन कराया। इतना अधिक प्रेम देखकर यम भी बहुत प्रसन्न होकर बहन यमुना से कुछ वर मांगने को कहा तो यमुना ने फिर से भाई दूज पर आने को कहा और यम ने भी कहा कि आज के दिन (कार्तिक द्वितिया) जो यमुना नदी में स्नान कर के अपनी बहन के घर भोजन करेगा उसे यम का भय नहीं होगा तब से ही भाई दूज मनाने की परम्परा चली आ रही है।

यम द्वितिया के दिन चित्रगुप्त जयन्ती भी मनायी जाती है। इस दिन लेखा–जोखा रखने वाले भगवान चित्रगुप्त जी की प्रतिमा या छाया चित्र रख कर पूजा की जाती है, विद्यार्थी उनके समक्ष कलम और दवात की पूजा करते है जिससे उन्हे लेखनी की शक्ति प्राप्त हो। वहीं कारोबारी लोग अपने बही खातों की भी पूजा करते हैं। इस अवसर पर हवन आदि करके आराध्य भगवान चित्रगुप्त को प्रसन्न किया जाता है।

निष्कर्ष–कार्तिक मास का महिना धार्मिक दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण बताया गया है जिसमें कई महत्वपूर्ण पर्वों के अपने अलग–अलग रिवाज एवं परम्पराएं है जिसे नई पीढ़ी को देखने व जानने का मौका मिलता है। जहाँ सभी दौड़ भाग की जिन्दगी में अपने में व्यस्त होते है वही ये पंचपर्व पूरे परिवार को एकीकृत करने में केन्द्रीय भूमिका निभाते है। इन महत्वपूर्ण पर्वों के अवसर पर हमारे अन्दर का कलाकार भी जाग्रत हो जाता है जो अपने घरों को विभिन्न प्रकार के कलात्मक तत्वों से सजाता है इसके लिए सीधे, सरल रूपाकारों को विशेष स्थान दिया जाता है। आज अधिकांश घर पक्के हो गए है जिन पर पहले की तरह कलात्मक अलंकरण व चित्रकारी करना असम्भव है फिर भी इन शुभ अवसरों पर कुछ न कुछ लोक चित्रण हो जाता है। कार्तिक मास में विभिन्न प्रकार के कलात्मक स्वरूपों को सहज ही देख सकता हैं, इन कलात्मक स्वरूपों ने ही हमारी परम्परा को सहेज रखा है। पंच पर्वों में किए जाने वाले प्रयोग से आज भी

यह प्रतीत होता है कि हमारी आस्था, विश्वास एवं परम्परों में मानवीय चेतना को सुसंगठित करने की भावना परिलक्षित होती है।

संदर्भ ग्रन्थ–

[1] ठाकुर प्रसाद पंचाग, प्रकाशन–सविति्र ठाकुर प्रसाद, नाटीइमली, वाराणसी, पृ0 सं0–11

[2] व्रत और त्यौहार पौराणिक एवं सास्कृतिक पृष्ठभूमि, डॉ0 शान्ति जैन, प्रकाशन– हिन्दुस्तान अकादमी, इलाहाबाद पृ0–81, 86

[3] साक्षात्कार–स्थानीय कुम्हार राम चन्द प्रजापति, प्रयागराज, उम्र–65

[4] व्रत और त्यौहार पौराणिक एवं सास्कृतिक पृष्ठभूमि, पृ0–86

[5] रामचरितमानस, प्रकाशन–गीता प्रेस, गोरखपुर, पृ0–590।

[6] लोक संस्कृति की रूपरेखा, डॉ. कृष्ण उपाध्याय, प्रकाशन–लोकभारती, प्रयागराज, 2019

[7] साक्षात्कार–नन्की देवी, गांव–महगांव, कौशम्बी, दिसम्बर 2020, उम्र–85

[8] अमर उजाला, प्रयाग सिटि, 27.अक्टूबर 2019, पे0 नं0–3

[9] काशी के शिल्प में आलंकारिक प्रतीक एवं अभिप्राय, डॉ0 आभा मिश्रा, प्रकाशन– कला प्रकाशन, वाराणसी, पृ0 सं0–80

[10] लोक रीति–रिवाज, राम शब्द सिंह, राज्य ललित कला अकादमी उ0 प्र0, पृ0–43

[11] कला त्रैमासिक लोक कला विशेषांक, राज्य ललित कला अकादमी उ0 प्र0, जनवरी–मार्च 2002, पृ0– 10–13

12 लोक संस्कृति और लोक साहित्य, डॉ0 नरायण कौशिक, हिन्दी बुक सेन्टर, दिल्ली 2000 पृ–302